27

अमेरिका और रूस से भारत के संबंध

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद (1945), संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (संक्षिप्त में यू.एस.ए.या यू.एस.) दो महाशक्तियों में से एक महाशक्ति बनकर उभरा, दूसरी महाशक्ति सोवियत संघ थी। सैन्य और आर्थिक दृष्टि से दोनों ही राष्ट्र इतने अधिक शक्तिशाली थे कि वे विश्व के किसी भी कोने में अपनी शक्ति को प्रक्षेपित कर सकते थे। जब 1947 में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की तो दोनों ही देशों से वह अपने संबंध अच्छे बनाना चाहता था। यह एक विश्वास था कि भारत और अमेरिका के बीच एक प्राकृतिक संबंध बनेगा। भारत विश्व का सबसे बड़ा और एशिया का पहला पूर्ण लोकतंत्र बनकर उभरा और अमेरिका को सबसे अधिक शक्तिशाली और विख्यात लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त था। भारत और रूस के संबंध में दोनों में कुछ समानताएं सहज ही दिखाई पड़ती थीं। परंतु दोनों के साथ भारत के संबंधों ने एक अलग ही रास्ता अपनाया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत के संघर्ष में अमेरिका का सहयोग जान सकेंगे;
- शीत युद्ध के दौरान भारत-अमेरिकी संबंधों में उत्पन्न समस्याओं को जान सकेंगे;
- समकालीन मामलों के परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिकी संबंध समझ सकेंगे;
- तत्कालीन सोवियत संघ और भारत के बीच राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्रों में संबंधों की मजबूती के विषय में जानकारी लेंगे;
- भारत और रूस के बीच सहयोग के क्षेत्र जानेंगे।

27.1 भारत-अमेरिकी संबंध

भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक संबंधों की शुरुआत हमारी स्वतंत्रता से छह वर्ष पहले नवम्बर 1941 में हुई। अमेरिका में भारत की स्वतंत्रता के लिए एक सद्भावना थी। भारत के साथ राजनयिक संबंधों की स्थापना के निर्णय ने यह दर्शाया कि अमेरिका स्वतंत्रता के प्रश्न पर अंग्रेजों के व्यवहार से खुश नहीं था। अमेरिका को विश्वास था कि भारत के द्वारा हिटलर के विरुद्ध संघर्ष में दी गई सहायता के बदले ब्रिटेन को यह वादा करना चाहिए कि युद्ध के बाद वे भारत को उसकी अपनी सरकार बनाने देंगे। अटलांटिक चार्टर में अमेरिका और ब्रिटेन ने शोषित लोगों को एक नई सुबह की आशा की किरण दिखाई जो कि युद्ध के सफलतापूर्वक समाप्त होने पर उन्हें प्राप्त होगी। इसके लिए भारतीयों की आखों में अमेरिका के प्रति आभार दिखाई देता था। हालांकि उसके बाद ब्रिटेन ने यह घोषणा की कि यह चार्टर केवल उन यूरोपियन क्षेत्रों पर लागू होना था जो हिटलर के नाजी कब्ज़े के अंतर्गत आते थे।

27.1.1 शीत युद्ध के दौरान संबंध

भारत और अमेरिका के संबंध शिखर पर पहुंचने में असफल रहे। इसको वास्तविक दिशा देने में कई कारक उत्तरदायी थे। अमेरिका द्वारा साम्यवाद को दबाने की सोच का यह परिणाम था, जिसके कारण अमेरिका और सोवियत संघ में शीत युद्ध आरंभ हुआ। नव स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने दोनों महाशक्तियों द्वारा उकसाने पर भी शीत युद्ध में उनका साथ देने से नकार दिया। नेहरू ने गुट निरपेक्ष रहने की नीति अपनायी जिसने भारत को उसकी विदेश नीति और संबंधों के बारे में स्वतंत्रता पूर्वक निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान की। अमेरिका ने भारत के इस इनकार को अमैत्रीपूर्ण समझा। भारत-अमेरिकी संबंधों को 1954 में गहरा आघात लगा। अमेरिका ने शीत युद्ध को भारत के दरवाजे पर ला खड़ा कर दिया। उसने सीटो और सैंटो नाम के दो सैन्य समूह बनाए जिनमें पाकिस्तान एक प्रमुख सदस्य था। अमेरिकी सेना पाकिस्तान को साम्यवाद के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए सहायता प्रदान करती थी और पाकिस्तान इसका प्रयोग भारत के विरुद्ध करता था जो कि प्रारंभिक आश्वासनों के विपरीत था।

अक्टूबर 1962 में भारत और चीन के बीच युद्ध ने भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में एक नया तत्व जोड़ दिया। पहली बार भारत में कई आवाजें उठीं कि चीन के विरुद्ध भारत को अमेरिका के साथ सैन्य संधि कर लेनी चाहिए। बहुत-से लोग यह भी चाहते थे कि गुट निरपेक्षता की नीति में गंभीर फेरबदल किया जाए। संभवत: अमेरिका को भी यह आशा थी कि भारत अब चीन विरोधी और साम्यवाद विरोधी गठजोड़ के लिए तत्पर हो जाएगा। जब चीनी आक्रमण तीव्र हो गया, तब भारत ने वाशिंगटन (अमेरिका) से तुरन्त सैन्य सहायता की मांग की। उसके प्रत्युत्तर में अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने भी तुरंत ही छोटे हथियार और अन्य साज-सामान भेजकर भारत की सहायता की। दोनों देशों के बीच इस सौदे पर हस्ताक्षर होने से पहले ही हथियारों की पहली खेप भारत पहुंच गई। उसके बाद, अमेरिका ने रुपये में भुगतान स्वीकार करने पर भी सहमति दिखाई।

हालांकि अमेरिका का यह मैत्रीभाव भारत में तब समाप्त हो गया जब उसने 1965 में भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का जिम्मेदार ठहराने के लिए पाकिस्तान पर सीधे-सीधे आरोप लगाने में अपनी अनिच्छा दिखाई। इसके साथ ही पाकिस्तान को अमेरिका का सहयोग और वियतनाम पर अमेरिकी युद्ध से भारत-अमेरिकी संबंधों में शिथिलता आ गई। 1970 के शुरू में अमेरिका का चीन से घुलना-मिलना, भारत-अमेरिकी संबंधों में बदलाव का मुख्य कारण बना। बंगलादेश की घटना भी भारत-अमेरिकी संबंधों में एक नया संकट थी। अमेरिकी प्रशासन ने कहा कि पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) का विद्रोह पाकिस्तान को तोड़ने वाला आंदोलन था और इसे दबाने के लिए नृशंसतापूर्वक व्यवहार उचित था। 1971 में बांग्लादेश युद्ध के दौरान अमेरिका ने सुरक्षा परिषद में भारत-विरोधी प्रस्ताव रखा और अमेरिका ने भारत को सभी प्रकार की आर्थिक सहायता देना बंद कर दिया। स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा मुफ्त भोजन वितरण करने की एक मात्र सहायता निरंतर चलती रही। वांशिगटन ने अमेरिका के सातवें बेड़े के एक भाग को भी बंगाल की खाड़ी में भेज दिया। परमाणु शक्ति वाला यू.एस.एस. एन्टरप्राईज़ बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तान को हार से बचाने के लिए पहुंच गया। अमेरिका को यह बात समझने में कुछ समय (कुछ वर्ष) लगा कि दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भारत एक महत्वपूर्ण देश है। यह रिश्तों को सामान्य बनाने की ही भावना थी कि भारत ने 1977 में राष्ट्रपति कार्टर की यात्रा की मेजबानी की।

परंतु एक बार फिर झटका लगा। 1979 में अफगानिस्तान पर सोवियत संघ के आक्रमण ने भारत और अमेरिका को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया। अफगान मुजाहिदीन को सैन्य सहायता प्रदान करने में पाकिस्तान प्रमुख था। कोई संदेह नहीं कि अफगानिस्तान के विरुद्ध सोवियत संघ के कार्यों को भारत की सहानुभूति ने अमेरिका के साथ भारत के संबंधों को क्षति पहुँचाई।

पाठांत प्रश्न 27.1

रिक्त स्थान भरिए –

(क) भारत-अमेरिकी संबंधों की शुरुआत .... में हुई। (1941) (1947)

(ख) एशिया में अमेरिका ने .... सैन्य समूह की स्थापना की। (सीटो), (सैन्टो)

(ग) 1977 में भारत यात्रा पर आने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति का नाम .... था (जिमी कार्टर/रिचर्ड निक्सन)

(घ) अमेरिका द्वारा भारत के विकास हेतु सहायता ....में चरम सीमा पर पहुँची। (1962/1965)

27.1.2 भारत को अमेरिकी सहायता

अमेरिका द्वारा भारत को आर्थिक सहायता देने की शुरुआत धीमी थी। स्वतंत्रता के समय भारत का खाद्य उत्पादन इसकी करोड़ों की जनसंख्या के लिए अपर्याप्त था; इसके औद्योगिक और सेवा क्षेत्र भी पिछड़े हुए थे। इसी कारण, द्विपक्षीय सहायता के लिए भारत दूसरे देशों पर निर्भर था। खाद्य संबंधी सहायताओं में सबसे पहली सहायता अमेरिका से 1951 में प्रारम्भ हुई। 1954 में अमेरिकी कांग्रेस ने एक पब्लिक लॉ 480 जारी करके अतिरिक्त अमेरिकी गेहूँ को भारत में बेचने की अनुमति दे दी। 1970 के प्रारम्भ तक पी.एल 480 के अंतर्गत भारत यह सहायता प्राप्त करता रहा। राजनैतिक संबंधों में संदेह की कहानी सिक्के का केवल एक पहलू है। शीत युद्ध के दौरान, राजनैतिक असमानताओं के बावजूद 1950 से ही भारत को आर्थिक और खाद्य सहायता मिलती रही। खाद्य सहायता के अतिरिक्त अमेरिका ने भारत के विकास में बहुत बड़ी द्विपक्षीय सहायता प्रदान की है। फिर भी यह स्मरण रहे कि यह सहायता भारी उद्योगों के विकास के लिए नहीं थी बल्कि यह कृषि, कच्चे माल और खनिजों के विकास के लिए थी। एक मजबूत औद्योगिक आधार बनाने के लिए भारत को सोवियत संघ की ओर रुख करना पड़ा। अमेरिका द्वारा विकास के लिए दी गई सहायता, जो कि लगभग 500 मिलियन डॉलर थी, 1962 में चरम सीमा पर पहुंच गयी। बांग्लादेश युद्ध के दौरान अमेरिका ने भारत को दी जाने वाली सभी सहायता बंद कर दी। परंतु एक लंबे समयान्तराल के बाद 1978 में ये द्विपक्षीय सहायता फिर से प्रारम्भ हुई। परंतु 1970 के बाद द्विपक्षीय सहायता का महत्व कम हो गया क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण (आईडीए) और विश्व बैंक से संबद्ध बहुमुखी सहायता में तेजी से विकास हुआ। यद्यपि आईडीए का अधिकांश धन अमेरिका का ही था जो कि परोक्ष रूप से आईडीए को प्राप्त होता था। 1980 के अंत तक विश्व बैंक की कर्ज देने की क्षमता लगभग दो मिलियन डॉलर हो गई। अत: भारत के लिए बहुमुखी आर्थिक सहायता द्विपक्षीय सहायता से अधिक महत्वपूर्ण थी। अमेरिका ने भी भारत के 5.8 मिलियन ऋण के अनुरोध को 1981 में इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड (आईएमएफ) द्वारा स्वीकृति देने में कोई आपत्ति नहीं जतायी। यह ऋण किसी भी सदस्य देश द्वारा मांगी गई सबसे बड़ी राशि थी।

27.1.3 समकालीन भारत- अमेरिकी संबंध

1990 में शीत युद्ध की समाप्ति ने अमेरिका को अकेली महाशक्ति बना दिया। इस वास्तविकता से भारत-अमेरिकी संबंधों का नए प्रकार से मूल्यांकन किया जाने लगा। इससे भारत और अमेरिका को निकट आने के नए अवसर प्राप्त होने लगे। सैनिक संबंधों की शुरुआत हुई। अमेरिकी निवेश होने लगे; सूचना और संचार तकनीक के कुशल व्यवसायियों ने भारत की छवि को अमेरिका में राजनैतिक दृष्टि से सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया। अमेरिका और भारत के रिश्तों को नया मोड़ देने वाली सबसे हालिया

घटना 1999 में बदलाव लाने में कारगिल संकट के समय अमेरिका द्वारा निभाई गई भूमिका प्रमुख थी। राष्ट्रपति क्लिंटन ने 2000 में भारत का काफी सफल दौरा किया। राजनीतिक दृष्टि से आतंकवाद तथा परमाणु अप्रसार मुख्य मुद्दे थे। विगत वर्षों में भारत-अमेरिकी संबंधों को राष्ट्रपति बिल क्लिंटन द्वारा पाकिस्तान को कश्मीर में उसकी सेनाओं को नियंत्रण रेखा से हटाने के लिए कहने को भारत ने एक मील का पत्थर माना।

जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान की भूमिका को मुख्य रूप से उछाल कर भारत आतंकवाद के संकट से संघर्ष करने के महत्व को प्रकाश में लाया। परंतु अमेरिका ने आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई करने में रुचि नहीं दिखाई, जब तक कि उसके दो शहरों, न्यूयॉर्क और वाशिंगटन पर 11 सितंबर 2001 को बहुत बड़ा हमला नहीं हुआ। अमेरिका के आतंकवाद विरोधी अभियान में भारत ने अपना पूरा सहयोग दिया। यद्यपि अमेरिका से हमारी दलील कि अफगानिस्तान में तालिबान तथा जम्मू कश्मीर में जेहादियों को पाकिस्तान की सहायता ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का अड्डा बना दिया है, निष्प्रभावी रही। अल कायदा आतंकवादियों से संपर्क करने के लिए अमेरिका को पाकिस्तान की बहुत आवश्यकता थी। अतः अमेरिका ने आतंकवादियों को 'अच्छे' और 'बुरे' आतंकवादियों के रूप में देखा। कश्मीर विधान सभा और भारत की संसद पर जब क्रमशः अक्तूबर और दिसम्बर, 2001 में आतंकवादी हमले हुए तो उन्होंने सहानुभूति दिखाई। आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में साथ देने वालों की सूची में अमेरिका ने फिर से शीत युद्ध के समय उसका साथ देने वाले पाकिस्तान को सम्मिलित किया। जनरल परवेज मुशर्रफ के पाकिस्तान में सैन्य शासन की कड़ी निंदा करने वाले वाशिंगटन ने मुशर्रफ को आतंकवाद विरोधी लड़ाई के लिए बनाए गए अंतर्राष्ट्रीय गठजोड़ का एक पूर्णतः विकसित भागीदार बनाया। बुश प्रशासन ने पाकिस्तान के ऊपर लगी बंदिशें हटा दी और उसे उदार रूप से सहायता देने का वायदा किया तथा मुशर्रफ सरकार को औचित्यपूर्ण बताया; जैसा उसने पहले कभी नहीं कहा था। युक्तिसंगत रूप से भारत को यह लगने लगा कि वाशिंगटन एक बार फिर इस्लामाबाद की ओर झुक जाएगा।

अमेरिका को सचेत भी किया गया कि घटनाएं नियंत्रण से बाहर जा सकती थीं। नई दिल्ली को यह दर्शाने के लिए कि इन हमलों में पाकिस्तान का हाथ होने के भारत के आरोप को अमेरिका ने गंभीरता से लिया है, बुश प्रशासन ने उन दो पाकिस्तानी आतंकवादी गुटों को आतंकवादी संगठनों की अमेरिकी सूची में डाल दिया, जिन्हें भारत हमले का जिम्मेदार मानता था। भारत के आरोप के अनुसार अमेरिका ने खुलकर स्वीकार नहीं किया कि पाकिस्तान सरकार आतंकवादी गतिविधियों में संलग्न थी, परंतु वाशिंगटन के कथनों और कार्यों से यह स्पष्ट था कि इस्लामाबाद आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई कर सकता था और उसे ऐसा करना चाहिए।

अमेरिका ने कनाडा की भांति 1963 में भारत में परमाणु संयंत्र की स्थापना में सहायता की। परंतु 1970 के दशक में सहयोग फिर धुंधला पड़ गया क्योंकि 1974 में भारत ने पोखरन में शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण किए और परमाणु अप्रसार समझौते पर भी हस्ताक्षर करने से मना कर दिया।

1978 में अमेरिकी कांग्रेस ने परमाणु अप्रसार अधिनियम पारित किया। इस नियम के अंतर्गत यूरेनियम का निर्यात केवल उन्हीं देशों को किया जा सकता था जिनके परमाणु संयंत्रों का निरीक्षण करने की अनुमति थी और जिनकी सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के मानदंडों पर आधारित थी। स्मरण रहे कि परमाणु अप्रसार अमेरिका का एक अपरिवर्तनीय लक्ष्य है। अमेरिका को आशा थी कि भारत 1996 में सीटीबीटी पर हस्ताक्षर कर देगा। परंतु भारत ने ऐसा नहीं किया और जब भारत ने 1998 में पोखरण में पांच परमाणु विस्फोट करके स्वयं को परमाणु शक्ति रखने वाला (परमाणु संपन्न) देश घोषित कर दिया तो अमेरिका ने सैन्य और आर्थिक प्रतिबंध लगाए। द्विपक्षीय संबंध अब गिरावट की ओर जाते प्रतीत होने लगे परंतु भारत अपने निश्चय पर अड़ा रहा। दो वर्षों तक भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह और अमेरिका के

उपसचिव स्ट्रोब टालबॉट के बीच वार्ताएं हुईं। दोनों देशों के बीच 1960 के प्रारम्भ से इस प्रकार की गंभीर और निर्णायक वार्ताएं कभी नहीं हुईं। इन वार्ताओं ने द्विपक्षीय संबंधों को एक नई दिशा प्रदान की। 1999 में अमेरिका ने भारत पर लगाए गए कुछ प्रतिबंधों को हटा लिया। कांग्रेस द्वारा आगे दी गई कई सहायताओं की ओर यह पहला कदमा था। अब अमेरिका भारत को परमाणु अस्त्रों से युक्त एक जिम्मेदार राष्ट्र मानता है।

1990 में भारत की खुली अर्थव्यवस्था के बाद अमेरिकी कंपनियों द्वारा सहायता के बजाय निवेश को महत्वपूर्ण माना जाने लगा। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अर्थात कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में; भारतीय युवा पीढ़ी की भूमिका ने भारत और अमेरिका के बीच व्यापार को एक नई दिशा प्रदान की। उसके बाद सूचना प्रौद्योगिकी के वे व्यवसायी जो अमेरिका में जाकर बस गए थे, वे वहाँ सबसे अधिक सफल गैर-यूरोपीय समूह बन गए। उन्होंने अमेरिका में भारत की नई छवि प्रस्तुत करने में सहायता की।

भारत और अमेरिका के बीच सन् 2003 में लगभग $18 बिलियन डालर का व्यापार हुआ। इस संबंध में सबसे अधिक उत्साहवर्धक बात यह रही कि अमेरिका को $13 बिलियन का भारतीय निर्यात किया गया और भारत को $5 बिलियन अमेरिकी निर्यात। परंतु अमेरिका और चीन के बीच $180 बिलियन का व्यापार हुआ। चीन ने अमेरिका को $152 बिलियन का निर्यात और अमेरिका ने $28 बिलियन का निर्यात चीन को किया। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि चीन का केवल शंघाई शहर ही संपूर्ण भारत में किए अमेरिकी निवेश से अधिक निवेश अपनी ओर खींच लेता है।

पाठगत प्रश्न 27.2

सही उत्तर पर (✓) लगाईए :

(क) अमेरिकी अस्त्र भारत में बिना किसी राजनैतिक शर्त के आए। (सत्य/ असत्य)

(ख) 1971 में बांग्लादेश युद्ध ने भारत-अमेरिकी संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया। (सत्य/ असत्य)

(ग) क्लिंटन प्रशासन के दौरान अमेरिका और भारत के संबंध सुधरे। (सत्य/ असत्य)

(घ) अमेरिका परमाणु अस्त्रों का प्रसार विरोधी है। (सत्य/ असत्य)

(ङ) अमेरिका ने भारत द्वारा 1998 में किए गए परमाणु परीक्षणों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। (सत्य/ असत्य)

रिक्त स्थान भरें–

(च) अमेरिकी कांग्रेस ने ______________ पारित कर भारत को गेहूं बेचने की अनुमति दी। N.D (पी.एल. 480/पी.एल 408)

(छ) भारत के विकास के लिए अमेरिकी सहायता ________ में चरम पर थी। (1962) (1965))

27.2 सोवियत संघ से भारतीय संबंध

भारत और सोवियत संघ के बीच संबंध कुछ संयुक्त घटकों पर आधारित थे। भारत द्वारा अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करना और सोवियत संघ की साम्राज्यवाद विरोधी विचारधारा एक-दूसरे से मेल खाती थी। इस कारण भारत में सोवियत संघ के उद्देश्यों एवं गतिविधियों के प्रति पश्चिम द्वारा प्रचारित कोई डर नहीं था।

सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता की 1955 में भारत यात्रा के बाद राजनैतिक संबंधों में तीव्रता से सुधार हुआ।। सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ ने कश्मीर मामले पर भारत का समर्थन करते हुए पश्चिमी देशों द्वारा इस मामले में लिए गए निर्णय के विरुद्ध अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग किया। सबसे महत्वपूर्ण सहायता

सोवियत संघ द्वारा भारत में भारी उद्योगों को विकसित करने में थी। 1950 के अंतिम वर्षों में सोवियत संघ ने भारत के आधारभूत उद्योगों के विकास तथा अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों; जैसे इस्पात, कोयला, मशीनी उपकरण निर्माण के लिए पब्लिक सैक्टर में बहुत अधिक आर्थिक और तकनीकी सहायता खुलकर प्रदान किया। भारत ने सोवियत संघ के साथ 1955 में एक महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए जो भिलाई में एक इस्पात उत्पादन इकाई की स्थापना के लिए था।

सोवियत संघ द्वारा दी गई सहायता की शर्तें भारत के पक्ष में थीं। जब अन्य पश्चिमी देश 6.5 प्रतिशत की ब्याज दर वसूल रहे थे, सोवियत केवल 2.5 प्रतिशत वसूल रहा था। दिसंबर 1953 में भारत और सोवियत संघ ने एक लंबी अवधि के व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते का आकर्षक पहलू यह था कि भारतीय आयात के लिए भुगतान डॉलर या अन्य करेंसी में न करके रुपये में किया जा सकता था। इसके विपरीत पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक लेन-देन डॉलर में था। इस उद्देश्य हेतु विभिन्न भारतीय बैंकों में सोवियत संघ के खाते खोले गए और उन्हें चालू रखा गया।

भारत को सैन्य आपूर्ति भारत-सोवियत मित्रता का महत्वपूर्ण प्रतीक बनकर उभरी। 1962 में, ठीक भारत-चीन युद्ध से पहले, चीन के विरोध के बावजूद भी मिग (लड़ाकू विमान) सौदे पर हस्ताक्षर हुए। अब तक लड़ाकू विमानों की आपूर्ति करने वाले ब्रिटेन का स्थान सोवियत संघ ने ले लिया।

1965 के भारत-पाक युद्ध के बाद सोवियत संघ ने भारतीय और पाकिस्तानी नेताओं की जनवरी 1966 में ताशकंद में एक बैठक बुलाई। 1971 में भारत और सोवियत संघ के नेताओं ने शांति, मित्रता और आपसी सहयोग की एक ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किए जो इस प्रकार की पहली संधि थी। इस संधि के अंतर्गत यदि दोनों में से किसी पर भी बाह्य आक्रमण होता है तो दोनों तुरंत पारस्परिक सलाह मशविरा करेंगे। इससे स्पष्ट हो गया कि बांग्लादेश मामले में मॉस्को भारत का पक्ष लेने को वचनबद्ध है।

भारत ने भी सोवियत संघ द्वारा दिसंबर 1979 में अफगानिस्तान पर हमले के समय उसका सहयोग किया। सार्वजनिक बयानबाजी के मामले में भारत ने नियंत्रण बरता। भारत के लिए अफगानिस्तान मामला, अमेरिका और पाकिस्तान के बीच किए गए सैन्य सहयोग से कम महत्व का था।

मिखाईल गोर्बाचोव के 1985 में सत्ता में आने के बाद सोवियत विदेश संबंधों में एक बड़ा परिवर्तन आया। अब सोवियत संघ का ध्यान अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ परस्पर लाभ के रिश्तों को बनाने में लगने लगा। 'कामन यूरोपीयन होम' बनाने के उसके प्रयास ने भारत जैसे विकासशील देशों के महत्व को कम कर दिया। चीन के साथ सोवियत संघ के भाईचारे के प्रयासों से भारत के साथ संबंधों में अस्थायी रूप से गिरावट आई।

पाठगत प्रश्न 27.3

रिक्त स्थान भरिए:

(क) भारत में किस इस्पात इकाई के लिए सोवियत संघ ने वित्तीय सहायता दी? ....
.

(दुर्गापुर, भिलाई, राउरकेला)

(ख) सोवियत नेता सबसे पहली बार किस वर्ष भारत दौरे पर आए? ....

(1955) (1957) (1971)

(ग) ताशकंद घोषणा कब हुई? .... (1966) (1971) (1974)

टिप्पणी

(घ) सोवियत संघ के साथ शांति, मित्रता और आपसी सहयोग की संधि पर किस वर्ष हस्ताक्षर किए गए? .... (1971) (1979)

(ङ) सोवियत संघ की आतंकवाद नीति किसके नेतृत्व में बदल गई? .... (मिखाइल गोर्बाचोव/मि. पुतिन)

27.2.1 सोवियत के बाद का युग

दिसंबर 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात, नये रूसी राष्ट्रपति बोरिस यैल्तसिन ने अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ घनिष्ठ संबंधों को कायम रखा, और भारत के साथ ''व्यावहारिक नवीनीकरण'' की आवश्यकता पर भी जोर दिया। 1993 में यैल्तसिन की भारत यात्रा के दौरान, भारत और रूस के बीच मित्रता और सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते ने 1971 के शांति, मित्रता और सहयोग के समझौते का स्थान लिया। पिछली संधि का सुरक्षा उपबंध हटा दिया गया और शांति तथा मित्रता बरकरार रखने का फैसला किया गया। एक अन्य निर्णय रुपये और रूबल में मुद्रा विनिमय पर समझौता होना था। सैन्य क्षेत्र में भी सहयोग की एक संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसमें यैल्तसिन ने यह विश्वास दिलाया कि अमेरिका द्वारा आपत्ति जताने के बावजूद भी रूस भारत को क्रायोजैनिक रॉकेट इंजिन देगा।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भारत दौरे के समय जब रणनीतिक हिस्सेदारी की घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए तो भारत-रूस संबंधों को नई ऊँचाई और संवेग प्राप्त हुआ। भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की नवम्बर 2001 में यात्रा के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की घोषणा पर हस्ताक्षर हुए। इस घोषणा ने आतंकवाद पर पश्चिमी देशों द्वारा अपनाए गए दोहरे मानदण्डों की निन्दा की।

यद्यपि रूस अब एक महाशक्ति नहीं रहा परंतु भारत के लिए इसकी महत्ता को कम नहीं आंका जा सकता। संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य होने के कारण यह अपनी निषेधाधिकार शक्ति का प्रयोग कर सकता है और जैसा कि आप जानते हैं, रूस केवल एक ऐसी विश्व शक्ति है जिसने कश्मीर और सीमा पार आतंकवाद में भारत की स्थिति का सदैव समर्थन किया है। यह पाकिस्तान को संसार के इस भाग में धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद फैलाने का जिम्मेदार मानता है। काश्मीर के मामले में महत्वपूर्ण समर्थन एक संयुक्त कथन के रूप में आया जो कि प्रधानमंत्री वाजपेयी की तीन दिवसीय मॉस्को यात्रा के दौरान जारी किया गया। इसने नियंत्रण रेखा और सीमा के अन्य स्थानों से होकर जम्मू और कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा घुसपैठ रोकने की मांग की। इसने पाकिस्तान से यह आग्रह भी किया कि वह पाकिस्तान और पाकिस्तान नियंत्रित क्षेत्र में आतंकवादी ठिकानों को समाप्त कर दे जिससे कि दोनों देशों के बीच सार्थक वार्ता हो सके। संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों में रूस भारत की सदस्यता का समर्थन करने वाला सबसे प्रमुख और मुखर देश है जो विस्तारित सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता चाहता है। रूस भारत के लिए सबसे भरोसेमंद, सस्ते परंतु उच्च गुणवत्ता वाले सैन्य उपकरणों की आपूर्ति करने वाला देश है। भारत की रक्षा संबंधी आवश्यकताओं जिसमें आधुनिक अस्त्र और तकनीक भी शामिल हैं, की सत्तर प्रतिशत आपूर्ति रूस करता है। रूस के रक्षा निर्यातों में लड़ाकू विमान (जैसे मिग-21) युद्ध टैंक (टी-72 एमएल) हैलीकॉप्टर, टैंक रोधी मिसाइलें, जहाज रोधी मिसाइलें, पनडुब्बियाँ, नाभिकीय पनडुब्बी (अकला-2) और विमान वाहक (गोर्सखोब) आदि शामिल हैं। जनवरी 2004 में एक ''महत्वपूर्ण सौदे'' में भारत ने 12 मिग-29 लड़ाकू विमानों के साथ एडमिरल गोर्सखोब को खरीदना स्वीकार किया। विमान वाहक 2008 तक भारत को पहुँचा दिए जायेंगे। भारत और रूस के बीच रक्षा सहयोग केवल सरकारी खरीद तक ही सीमित नहीं है बल्कि इनमें से कुछ हथियारों (जैसे कि मिग- 27 एम, सुखोई-30 एमके, टी- 72 टैंक आदि) का भारत में उत्पादन करना भी शामिल है। इसमें संयुक्त शोध और विकास और

एख-रखाव का सहयोग भी सम्मिलित है। भारत-रूस संयुक्त प्रयास का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण ध्वनि से तेज चलने वाली एन्टी शिप क्रूज मिसाईल,'ब्रह्मोस' को उत्पादित करना और बेचना है।

भारत और रूस के बीच मजबूत ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में विश्व के बारे में दोनों के विचार बहुत अधिक मेल खाते हैं। उनके सुरक्षा और आर्थिक हित इसे और मजबूत बनाते हैं। सभी प्रकार से उत्तम संबंधों में भारत-रूस व्यापार सबसे कमजोर कड़ी है। परंतु दोनों देशों के बीच आर्थिक अन्योन्य क्रिया ऊर्जा और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग से और अधिक तेज हो गई है।

कुछ अन्य क्षेत्रों में भी दोनों द्विपक्षीय सहयोग के लिए आशान्वित हैं। उनमें से एक क्षेत्र ऊर्जा सहयोग भी है। भारत ऊर्जा का एक बड़ा उपभोक्ता बनकर उभरा है। रूस के तेल और गैस के भंडार तथा तापीय् जलविद्युत और नाभिकीय ऊर्जा शक्ति में इसकी विशेषज्ञता भविष्य में भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होंगे। सोवियत रूस के सहयोग से तापीय और जलविद्युत शक्ति के कई संयंत्र यहां तैयार किए जा चुके हैं। नाभिकीय ऊर्जा क्षेत्र में भारत के लक्ष्यों को रूसी सहायता की आवश्यकता है क्योंकि केवल रूस ही वह नाभिकीय शक्ति है जो परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग करने को तैयार है।

आपने क्या सीखा

भारत और अमेरिका दो बड़े लोकतन्त्र हैं, परंतु लंबे समय से दोनों के बीच संबंध अच्छे नहीं हैं। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका का मुख्य लक्ष्य साम्यवाद को परे रखना था। परंतु भारत शीत युद्ध नीति से अलग रहना चाहता था। अत: भारत ने गुट निरपेक्षता की स्वतंत्र नीति अपनायी। यह बात अमेरिका को अच्छी नहीं लगी। दोनों देशों के बीच संबंध उस समय तनावपूर्ण हो गए जब 1950 में अमेरिका ने पाकिस्तान को हथियारों की आपूर्ति की, जबकि पीएल 480 के तहत अमेरिका भारत को गेहूँ की आपूर्ति भी कर रहा था। चीन के आक्रमण के समय अमेरिकी सहायता से 1960 के प्रारम्भ में अमेरिका के साथ मैत्री संबंधों में सुधार आया। परंतु यह अल्पकालिक था। खाद्य सहायता संबंधी शर्तों ने बाद के दशक में भारत-अमेरिकी संबंधों में समस्या उत्पन्न कर दी। बांग्लादेश युद्ध में पाकिस्तान का खुलकर समर्थन और बंगाल की खाड़ी में यूएसएस एन्टरप्राइज़ को भेजने के कारण संबंध निम्नतम बिन्दु पर पहुँच गए। शीत युद्ध के बाद संबंधों में थोड़ा परिवर्तन आया। विशेषत: उस समय जब अमेरिका ने 1999 में पाकिस्तान से नियंत्रण रेखा से अपनी सेनाओं को हटाने का दवाब बनाया तथा भारत को नाभिकीय हथियारों से युक्त एक जिम्मेदार देश माना। भारत-सोवियत संघ के संबंध प्रारम्भ से ही कुछ उभयनिष्ठ हितों पर आधारित थे। सोवियत संघ द्वारा कश्मीर मामले में सहयोग देने से संबंध और गहरे हो गए। इसके बाद एक आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था के निर्माण में; जैसे कि भिलाई संयंत्र की स्थापना आदि में सोवियत संघ से सहयोग प्राप्त हुआ। भारतीय सशस्त्र सेनाओं को भी सोवियत संघ से हथियार और युद्ध उपकरण प्राप्त हुए। सोवियत संघ ने मिग जैसे लड़ाकू विमानों के उत्पादन की अनुमति भारत को दे दी। भारत और सोवियत संघ के संबंधों की चरम सीमा उस समय हुई जब 1971 में बॉग्लादेश संकट के समय भारत और सोवियत संघ ने एक मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए। शीत युद्ध के तुरंत बाद के समय में संबंध थोड़े कम अवश्य हुए परंतु अब ये फिर से सही दिशा में अग्रसर हैं।

पाठांत प्रश्न

1. शीत युद्ध के दौरान भारत-अमेरिकी राजनैतिक संबंधों पर एक टिप्पणी लिखिए।
2. नाभिकीय मामलों के संदर्भ में भारत-अमेरिकी संबंधों का वर्णन कीजिए।
3. आतंकवाद के संदर्भ में भारत-अमेरिकी संबंधों का विश्लेषण कीजिए।

4. भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक संबंधों पर टिप्पणी कीजिए।
5. शीत युद्ध के दौरान भारत सोवियत संघ के संबंधों और उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।
6. शीत युद्ध के बाद भारत-सोवियत संघ के संबंधों का विश्लेषण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

(क) 1941

(ख) सीटो और सेन्टो

(ग) जिमी कार्टर

(घ) पी.एल. 480

(ङ) 1962

27.2

(क) सत्य

(ख) सत्य

(ग) सत्य

(घ) सत्य

(ङ) असत्य

(च) पी. एल 480

(छ) 1962

27.3

(क) भिलाई

(ख) 1955

(ग) 1966

(घ) 1971

(ङ) पुतिन

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 27.1.1 देखें
2. खण्ड 27.1.3 देखें
3. खण्ड 27.1.3 देखें
4. खण्ड 27.1.2 देखें
5. खण्ड 27.2 देखें
6. खण्ड 27.2.1 देखें